



# पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 12

अंक : 4

दिसम्बर, 2024

मूल्य : ₹2.00

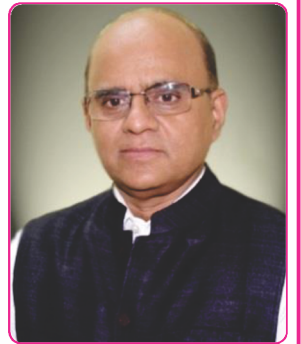


मार्गदर्शन : कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित

## कुलपति सन्देश

### आधुनिक पशुपालन के लिए आर्टिफिशियल इन्टेलीजेंस एक महत्वपूर्ण तकनीक: कुलपति

भारत मूलतः कृषि आधारित अर्थव्यवस्था है यहां की लगभग 70 प्रतिशत आबादी अपनी आजीविका के लिए कृषि व संबद्ध क्षेत्रों पर निर्भर है। विश्व की निरंतर बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण खाद्य उत्पादों की बढ़ती मांग पूर्ति के लिए सीमित संसाधनों से ही उत्पादन में वृद्धि की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि विश्व की जनसंख्या 7.3 बिलियन से वर्ष 2050 तक 9.7 बिलियन से अधिक हो जायेगी। इस कारण खाद्यान्न की मांग में जबरदस्त वृद्धि होगी जिसे पूरा करना एक चुनौती होगी। इस मांग को पारम्परिक तरीकों से पूरा करना सम्भव नहीं हो पायेगा। इसलिए आज कृषि तथा संबद्ध क्षेत्रों में आर्टिफिशियल इन्टेलीजेंस जैसी तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है, जिसमें पशुओं के रखरखाव, स्वास्थ्य तथा उत्पादन पर विशेष जोर दिया जा रहा है। यह एक उभरती हुई तकनीक है जो मशीनों के उपयोग से वृद्धि और मानवीय क्षमताओं को समझने और कार्य करने की सुविधा प्रदान करती है।



पशुपालन में इसका उपयोग पशुओं के स्वास्थ्य निगरानी, पशुओं में मद का पता लगाने, पशुओं की निगरानी तथा पशुधन रोगों की पूर्व चेतावनी, चोटों का शीघ्र पता लगाने, प्रजनन क्षमता का पता लगाने तथा पशु-पक्षियों के विचरण पर निगरानी आदि में इस तकनीक का उपयोग किया जा सकता है। आर्टिफिशियल इन्टेलीजेंस का उपयोग पशुचिकित्सा क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण है इस तकनीक के उपयोग में पशुपालन क्षेत्र में क्रांति आई है। किसानों व पशुपालकों द्वारा पशुरोगों की पहचान करने तथा समय पर उपचार करने के लिए आर्टिफिशियल इन्टेलीजेंस आधारित प्रारम्भिक पहचान प्रणालियों को काम में लिया जा रहा है। पशुओं के प्रमुख रोग जैसे थनेला रोग, एन्थेम्स आदि के लिए आर्टिफिशियल इन्टेलीजेंस तकनीकों के साथ-साथ पशुओं से सम्बन्धित डेटा जैसे पशुओं के स्वास्थ्य सम्बन्धित आंकड़े, मौसम की स्थिति आदि का उपयोग कर रोग पूर्वानुमान मॉडल विकसित किया जा रहा है। पशुओं के व्यवहार, तापमान तथा अन्य पैमानों के संघारण के लिए पहनने योग्य सेंसर, सम्पर्क रहित बायोमेट्रिक कम्प्यूटर विज्ञान आदि का उपयोग किया जा रहा है। इन डेटाओं का विश्लेषण कर पशुओं में प्रारम्भिक रोग का समय पर पता लगाने में मदद मिलती है। आर्टिफिशियल इन्टेलीजेंस द्वारा संचालित तकनीकों का उपयोग करके स्वतंत्र रूप से उपचार करने की क्षमताएं विकसित की जा रही है। इसी प्रकार रोबोटिक प्रणाली पशुओं के दवा देने में सहायक हो रही है। आर्टिफिशियल इन्टेलीजेंस के उपयोग से टेलीमेडीसीन और दूरसंचार क्षमताएं विकसित हो रही हैं, इससे विशेषज्ञों द्वारा दूरस्थ स्थानों से रोगी पशुओं की चिकित्सा के लिए सलाह देने में मदद मिलती है तथा स्थानीय चिकित्सकों से सीधे रूप से साथ मिलकर समस्याओं का समाधान करने में मदद कर सकती है। आर्टिफिशियल इन्टेलीजेंस का उपयोग पशुचिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। इस नई तकनीक का उपयोग पशुओं के स्वास्थ्य और उनके उपचार में सुधार के लिए किया जा रहा है। यह तकनीक पशुचिकित्सा क्षेत्र में नये अवसरों को उत्पन्न कर रही है तथा सकारात्मक परिणाम भी मिल रहे हैं। अतः विश्वविद्यालय को भी किसानों व पशुपालकों को इस तकनीक के बारे में जागरूक करना चाहिए।

आचार्य मनोज दीक्षित

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

—महात्मा गांधी





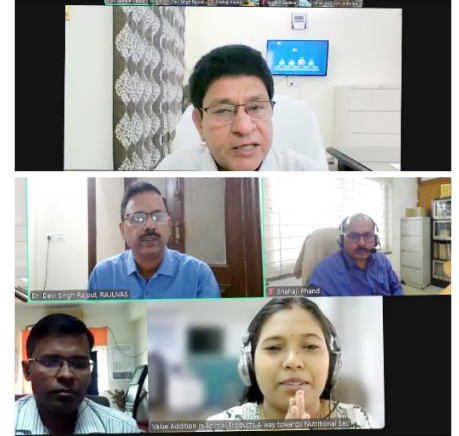
## विश्वविद्यालय समाचार

### गुणवत्तायुक्त पशुचिकित्सा शिक्षा एवं चिकित्सा सुविधा पर समीक्षा बैठक

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के संघटक एवं सम्बद्ध वेटेनरी महाविद्यालयों एवं विभिन्न इकाईयों द्वारा 11 नवम्बर को गुणवत्ता पूर्ण पशुचिकित्सा शिक्षा एवं उपलब्ध सुविधाओं के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु वेटेनरी विश्वविद्यालय के संघटक एवं संबद्ध महाविद्यालयों के डीन-डायरेक्टर की कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित की अध्यक्षता में हाइब्रिड मोड पर समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने बैठक में अपने सुझाव देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय को लघु एवं दीर्घकालीन प्लानिंग करके उसके अनुरूप कार्यों को सम्पादित करना होगा। कुलपति आचार्य दीक्षित ने क्लासरूम शैक्षणिक व्यवस्था को केन्द्रिकृत करने का भी सुझाव दिया ताकि सभी संघटक एवं सम्बद्ध महाविद्यालय, गुणवत्ता पूर्ण व्याख्यानों का लाभ उठा सकें। बैठक का समन्वय करते हुए अधिष्ठाता एवं संकायाध्यक्ष प्रो. हेमन्त दाधीच ने बताया कि बैठक में उपस्थिति को केन्द्रित व्यवस्था से लागु करने का सुझाव दिया गया तथा पशुपालकों हेतु निःशुल्क मेडिसिन उपलब्ध करवाने हेतु भी विकल्प पर चर्चा की गई। विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के करियर एडवांसमेंट के तहत प्रमोशन, रिक्त शैक्षणिक पदों पर भर्तियों पर चर्चा एवं सुझाव दिये गये। बैठक के दौरान वेटेनरी कौंसिल ऑफ इण्डिया द्वारा प्रस्तावित स्टेप 2016 के तहत शिक्षण स्तर, उपलब्ध संसाधन एवं चिकित्सकीय सुविधाओं पर विस्तृत चर्चा की गई। सम्बद्ध एवं संघटक वेटेनरी महाविद्यालय के अधिष्ठाता, विश्वविद्यालय के निदेशक एवं फ़ैकल्टी सदस्य ऑनलाइन माध्यम से जुड़े एवं महाविद्यालय में चल रही शैक्षणिक एवं अन्य सुविधाओं की जानकारी प्रदान की।

### पशु उत्पादों में मूल्य संवर्धन, पोषण सुरक्षा और पशुधन अर्थव्यवस्था विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

वेटेनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज), हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में "पशु उत्पादों में मूल्य संवर्धन: पोषण सुरक्षा और पशुधन अर्थव्यवस्था की ओर एक रास्ता" विषय पर 18-20 नवम्बर तक ऑनलाइन मोड पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए वेटेनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. हेमन्त दाधीच ने कहा कि देश में दुग्ध-मांस से बने उत्पादों की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ी है। इन उत्पादों के विपणन से देश की अर्थव्यवस्था को भी संबल मिला है। हमें पशुउत्पादों के उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ भारतीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मानक स्तरों को ध्यान में रखते हुए गुणवत्ता निर्धारण पर भी ध्यान देना होगा। ताकि ये उत्पाद स्वास्थ्य की दृष्टि से एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विपणन की दृष्टि से सही साबित हो सके। पशु उत्पादों के मूल्य संवर्धन की विभिन्न तकनीकों एवं नवीन ज्ञान को समझ कर पशुपालक एवं इण्डस्ट्री से जुड़े लोग रोजगार का सर्जन कर सकते हैं। राष्ट्रीय संस्थान मैनेज हैदराबाद के उप-निदेशक डॉ. साहजी फंड ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान पशुधन उत्पादन प्रौद्योगिकी क्षेत्र में नवीन शोधो, उन्नत तकनीकों को जानने का मौका मिलेगा। इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम देश के विभिन्न संस्थानों पर भी चलाए जा रहे हैं ताकि शोधार्थी, शिक्षक एवं संबन्धित व्यवसाय से जुड़े लोगो को इसका फायदा मिल सके। तीन दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान देश के ख्याति प्राप्त आई.सी.ए.आर. इंस्टीट्यूट एवं विश्वविद्यालयों के विषय विशेषज्ञों ने पशु उत्पादों के मूल्य संवर्धन के विभिन्न पहलुओं पर पशुचिकित्सकों, प्रसार कार्यकर्ताओं, वैज्ञानिकों एवं विद्यार्थियों को व्याख्यान प्रस्तुत किये। समापन सत्र में विश्वविद्यालय के डीन-डायरेक्टर, शिक्षक एवं विद्यार्थी भी ऑनलाइन माध्यम से जुड़े।



### बोर्ड ऑफ स्टडीज की 14वीं बैठक संपन्न

वेटेनरी विश्वविद्यालय की 14वीं बोर्ड ऑफ स्टडीज की बैठक 23 नवम्बर को हाइब्रिड मोड पर आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित द्वारा की गई। कुलपति आचार्य दीक्षित ने बैठक में कौशल विकास के नये सर्टीफिकेट पाठ्यक्रम जैसे श्वान पालन, मुर्गी पालन, आपदा प्रबन्धन, मिल्क टेस्टिंग आदि शुरू करने का सुझाव दिया जिससे वेटेनरी फिल्ड के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों से जुड़े युवाओं को भी लाभ मिल सके। बैठक में शिक्षा और पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता के बारे में विचार-विमर्श किया। बोर्ड के सदस्य सचिव प्रो. बी.एन श्रृंगी ने बैठक के एजेण्डों को पढ़ा और सदस्यों से विचार विमर्श किया। फ़ैकल्टी चेयरमैन और अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच ने बताया कि बैठक में विभिन्न विभागों से आमंत्रित एजेण्डों पर चर्चा की गई। जिनमें स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश आर.पी.वी.टी. के माध्यम से करवाने, नियमित शैक्षणिक पाठ्यक्रमों के नामांकन में बदलाव, विद्यार्थियों की उपस्थिति, विद्यार्थियों की पाठ्योत्तर गतिविधियों आदि विषयों पर चर्चा की गई। शैक्षणिक गुणवत्ता सुधार हेतु विभागाध्यक्षों के विभिन्न सुझावों पर विचार विमर्श कर दिशा निर्देश प्रदान किये गये। बैठक में कुलसचिव बी.एल. सर्वा, अधिष्ठाता पी.जी.आई.वी.ई.आर. धर्म सिंह मीणा, अधिष्ठाता वेटेनरी कॉलेज, नवानिया (उदयपुर) प्रो. बलवन्त मेश्राम, अधिष्ठाता वेटेनरी कॉलेज, जोधपुर प्रो. शिव कुमार शर्मा, निजी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक मानव संसाधन विकास प्रो. राहुल सिंह पाल, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. प्रवीण बिश्नोई सहित वेटेनरी कॉलेज के विभागाध्यक्ष और अन्य अधिकारियों ने शिरकत की।







## अकादमिक परिषद् की 29वीं बैठक संपन्न

वेटेरनरी विश्वविद्यालय की 29वीं अकादमिक परिषद् की बैठक कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित की अध्यक्षता में 25 नवम्बर को आयोजित की गई। बैठक के प्रारम्भ में कुलपति आचार्य दीक्षित ने अकादमिक परिषद् के सभी सदस्यों का स्वागत किया एवं गत बैठक के सभी बिन्दुओं पर विचार विमर्श करते हुए कार्य अनुपालना को सर्वसम्मति से अनुमोदित किया। कुलसचिव बी.एल. सर्वा द्वारा बैठक में एजेण्डे प्रस्तुत किये गये तथा अकादमिक परिषद् के सदस्यों द्वारा विभिन्न एजेण्डों का अनुमोदन किया गया। बैठक में अकादमिक परिषद् सदस्यों ने वेटेरनरी महाविद्यालय, नवानिया, वल्लभनगर (उदयपुर) के लोगो (प्रतीक चिन्ह) पर सहमति जारी की। बैठक में स्नातक पाठ्यक्रमों बी.वी.एस.सी. एण्ड ए.एच. तथा डेयरी टेक्नोलॉजी में प्रवेश हेतु विश्वविद्यालय स्तर पर परीक्षा आयोजित करने के सुझावों पर चर्चा की गई। परिषद् द्वारा अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन द्वारा जारी विभिन्न अधिसूचनाओं का अनुमोदन तथा शोध गुणवत्ता हेतु एंटी-प्लेगियरिज्म नीति एवं विनियमों को प्रभावी तरीकों से लागू करने हेतु चर्चा की गई। अधिष्ठाता वेटेरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. हेमन्त दाधीच ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। बैठक में अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक अनुसंधान प्रो. बी.एन श्रृंगी, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. प्रवीण बिश्नोई, निदेशक पी.एम.ई. प्रो. उर्मिला पानू, परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुनीता पारीक, अधिष्ठाता पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर प्रो. धर्म सिंह मीणा, अधिष्ठाता वेटेरनरी कॉलेज, नवानिया (उदयपुर) प्रो. बलवन्त मेश्राम, अधिष्ठाता वेटेरनरी कॉलेज, जोधपुर प्रो. शिव कुमार शर्मा, डॉ. पंकज थानवी, डॉ. मितेश गौड़, डॉ. त्रिभुवन सिंह, डॉ. कुलदीप चौधरी, डॉ. राजेन्द्र स्वामी तथा अकादमिक परिषद् के सदस्य एवं विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।



## 75वें संविधान दिवस का हुआ गरिमामय आयोजन

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में 26 नवम्बर को भारत के 75वें संविधान दिवस का गरिमामय आयोजन किया गया। संविधान दिवस के उपलक्ष्य पर कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा कि भारत का वर्तमान संविधान प्रारूप एक लम्बी प्रक्रिया से गुजर कर पूर्ण हुआ जिसमें देश की तत्कालीन सामाजिक, भौगोलिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सभी पहलुओं को ध्यान रखते हुए लोकतांत्रिक प्रणाली को बनाया गया। हमारे लिए गर्व की बात है भारत दुनिया का एक ऐसा देश है जो कि अपनी आजादी के बाद संविधान को अक्षूण्य रखते हुए निरंतर प्रगति कर रहा है भारत की लोकन्त्रिक व्यवस्था का 75 वर्षों का सफलतापूर्वक कार्यकाल पूरे विश्व के लिए एक उदाहरण है। कुलपति आचार्य दीक्षित ने सभी को भारतीय संविधान के प्रति सत्य निष्ठा निभाने हेतु सभी को प्रतिज्ञा दिलाई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ अधिवक्ता एवं भूतपूर्व बार कौंसिल अध्यक्ष, बीकानेर अजय कुमार पुरोहित ने अपने संबोधन में कहा कि संविधान हमें मौलिक अधिकारों के साथ-साथ मूल कर्तव्य भी देता है आज के समय में लोग अधिकारों की बात तो करते हैं लेकिन अपने कर्तव्यों से विमुख हो जाते हैं हमें अपने कर्तव्यों का भी पालन करना है। पशुओं के कल्याण के संबंध में भी भारतीय संविधान में कई अधिनियम हैं जैसे पशु क्रूरता निवारण अधिनियम भारतीय पशु कल्याण बोर्ड वाइल्ड लाइफ एक्ट जैसे अधिनियम लागू किए गए हैं ताकि पशुओं को भी उनके जीवन का अधिकार मिले। कार्यक्रम के प्रारम्भ में अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच ने सभी का स्वागत किया एवं भारतीय संविधान की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने संविधान दिवस को गरिमामय और विशेष बनाने के लिए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।







## यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

### बम्बलू में आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव बम्बलू में 21 नवम्बर को आयुर्वेद विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। आयुर्वेद विभाग, बीकानेर के चिकित्सा अधिकारी डॉ. राजेन्द्र सिंगारिया के निर्देशन में शिविर का आयोजन किया। शिविर में 46 ग्रामवासियों का उपचार किया गया एवं आवश्यकता अनुसार आयुर्वेदिक दवाइयों का वितरण भी किया गया और मौसमी बीमारियों से बचाव हेतु सुझाव दिए गए। इस शिविर में ग्राम के वरिष्ठ नागरिकों ने भाग लिया। शिविर के प्रभारी डॉ. सिंगारिया ने ग्रामवासियों को प्रमुख मौसमी बीमारियों जैसे डेंगू, चिकनगुनिया, मलेरिया इत्यादि के बचाव एवं उपचार के बारे में जागरूक किया। चिकित्सा शिविर का प्रबंधन डॉ. मैना कुमारी, समन्वयक युनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी, राजुवास, बीकानेर के द्वारा किया। इस शिविर के आयोजन में डॉ. विनय कुमार, डॉ. सनी पंकज, डॉ. विश्वास, डॉ. जगदीश, ग्राम सरपंच सुमित्रा देवी, हेतराम कुकणा, ग्राम विकास अधिकारी राजाराम चौधरी, शिक्षक प्रताप सिंह, भागीरथ कुकणा, जैठाराम कुकणा, लक्ष्मणराम कुकणा, तौलाराम नाई आदि ग्रामवासियों का सहयोग रहा।



### गांव कतरियासर में आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं नेत्र जांच शिविर

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव कतरियासर में 23 नवम्बर को आयुर्वेदिक विभाग, बीकानेर के चिकित्सा अधिकारी डॉ. पवन गोदारा एवं ए.एस.जी. आई अस्पताल के डॉ. कपिल चौहान के निर्देशन में शिविर का आयोजन किया। शिविर में 178 ग्रामवासियों का नेत्र व स्वास्थ्य जांच कर आवश्यकता अनुसार आयुर्वेदिक दवाइयों का वितरण भी किया गया। शिविर के दौरान मौसमी बीमारियों से बचाव हेतु सुझाव दिए गए। इस शिविर में ग्राम के वरिष्ठ नागरिकों ने भाग लिया। प्रभारी आयुष्मान आरोग्य मंदिर (कतरियासर) के डॉ. प्रेमराम ने ग्रामवासियों को प्रमुख मौसमी बीमारियों जैसे डेंगू, चिकनगुनिया, मलेरिया इत्यादि के बचाव एवं उपचार के बारे में जागरूक किया। चिकित्सा शिविर का प्रबंधन डॉ. सुनिल कुमार, सहायक आचार्य, डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर ने किया। इस शिविर के आयोजन में डॉ. लोकेश कुमार, सलमान खान, हरेन्द्र कुमार, मुन्ताजिर, ग्राम सरपंच संतोष देवी, उप-सरपंच कैसूनाथ, सुरजाराम ज्याणी, ग्राम विकास अधिकारी मिलन यादव आदि ग्रामवासियों का सहयोग रहा।



### जोरजी का खेड़ा में वरिष्ठ नागरिक चिकित्सा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां (उदयपुर) द्वारा सैटेलाईट अस्पताल, वल्लभनगर के सहयोग से यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के तहत अंगीकृत गांव जोरजी का खेड़ा में दिनांक 29 नवम्बर को वरिष्ठ नागरिक चिकित्सा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. टीकमचन्द्र गोयल के नेतृत्व में किया गया। इस शिविर में कुल 35 वरिष्ठ नागरिकों के स्वास्थ्य की जांच की गई। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अंकित अवाना ने बताया कि इस शिविर में ग्रामीणों के ब्लड प्रेशर, शुगर एवं हीमोग्लोबिन आदि की भी जांच कर दवाईयां दी गई। शिविर के आयोजन में डॉ. महेन्द्र मील, डॉ. अभिषेक गौरव तथा डॉ. ममता कुमारी सहित संरपंच ग्राम पंचायत-ढावा, श्री भगतसिंह, ग्राम विकास अधिकारी श्री सूर्यप्रकाश जोशी, प्रधानाचार्य उच्च प्राथमिक विद्यालय, जोरजी का खेड़ा तथा ग्रामीणों का सहयोग रहा।



### खाद्य सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय के डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बस्सी (जयपुर) द्वारा यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव रामपुरावास (दूधली) में 27 नवम्बर को खाद्य सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, रामपुरावास (दूधली) स्कूल के शिक्षकों और छात्रों को खाद्य सुरक्षा और स्वच्छता के बारे में जागरूक किया गया। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. शफात अहमद खान ने जागरूकता शिविर का संचालन किया। कार्यक्रम में डॉ. नरेन्द्र कुमार, सहायक आचार्य, डॉ. महेन्द्र कुमार, तकनीकी सहायक एवं डॉ. खुशाल सौलकी, तकनीकी सहायक, डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बस्सी (जयपुर) उपस्थित रहें।



### गांव-खतेपुरा में वरिष्ठ नागरिकों और ग्रामीणों के साथ बैठक

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव खतेपुरा के ग्राम पंचायत भवन में दिनांक 30 नवम्बर को पेंशन योजना की स्थिति, कृषि और संबद्ध क्षेत्र में रोजगार के अवसर और विभिन्न क्षेत्रों में ग्रामीणों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं को जानने के लिए वरिष्ठ नागरिकों और ग्रामीणों के साथ बैठक आयोजित की गई। कार्यक्रम में डॉ. अशोक बेंदा, सहायक आचार्य, पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर उपस्थित रहें।





## पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

### पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरु)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरु) द्वारा दिनांक 5, 7, 11, 16, 23 एवं 28 नवम्बर को गांव सात्युं, अमरपुरा, न्यांगली, गोडास, ढाणी आशा एवं भालेरी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 161 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 18, 22, 23, 26 एवं 28 नवम्बर को गांव सत्यनगर, बन्नी, भटावली, पपरेश एवं खन्सबाड़ा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 90 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 8, 12 एवं 22 नवम्बर को गांव बगचौली लोधा, सहजपुर, एवं भैसने का पुरा गांवों में तथा 26 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 120 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, झुंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंगरपुर द्वारा दिनांक 22, 23, 25, 26 एवं 27 नवम्बर को गांव लीमड़ी, रामा ढाणी, बोकडसेल, सडा एवं दाद गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 133 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा दिनांक 23 नवम्बर को केन्द्र परिसर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 32 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनू

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनू द्वारा 8, 11, 13, 18, 20, 22 एवं 25 नवम्बर को गांव भोपतपुरा, धोलाखेड़ा, धमोरा, टोडपुरा, टोंकचिलारी, देवगांव एवं

बुगाला गांवों में तथा दिनांक 28 नवम्बर को केन्द्र परिसर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 157 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

### पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही द्वारा दिनांक 12 एवं 22 नवम्बर को गांव उड़ एवं वीरवाडा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 53 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 4, 21, 25 एवं 28 नवम्बर को गांव दुजार, केकड़ी, जोरावरपुरा एवं गेनाना गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 53 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा दिनांक 8, 14, 19, 21 एवं 27 नवम्बर को गांव गांवडी, जालखेड़ा, देवली माचियान, राजनगर एवं राजपुरा गांवों में तथा दिनांक 26 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 142 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा दिनांक 23 एवं 26 नवम्बर को गांव किरावाल एवं मेहरू गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 55 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा दिनांक 5-8, 11-14 एवं 19-22 नवम्बर को केन्द्र परिसर में तथा दिनांक 6 नवम्बर को गांव 14 बिरानी में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 112 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।





## सर्दियों में दुधारु पशुओं की देखभाल

मनुष्यों की भांति पशुओं में भी मौसम के बदलाव के साथ कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जैसा कि देशभर में अब ठंड के मौसम की शुरुआत हो चुकी है इस कारण पशुओं के लिए भी विशेष रख-रखाव जरूरी है। सर्दी का असर जितना इंसानों पर होता है उससे कई गुना पशुओं पर होता है। इसलिए आवश्यक है कि ठंड के समय दुधारु पशुओं का ज्यादा ध्यान रखा जाना चाहिये क्योंकि दुधारु पशु ठंड से यदि बीमार होते हैं तो इसका सीधा असर प्राथमिक रूप से उत्पादन पर पड़ता है। अतः ठंड के समय दुधारु पशुओं में उचित दुग्ध उत्पादन हेतु उनके आवास, खान-पान एवं स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए।

### सर्दियों में पशुओं के लिए आवास प्रबंधन

पशुओं को ठंड से बचाने एवं अधिक दूध की पैदावार लेने के लिए इनके आवास का उचित प्रबंधन अति आवश्यक है। पशुओं के बाड़ों की दिशा का चयन करते समय ये ध्यान रखा जाना चाहिए कि उन्हें अत्यधिक ठंड के समय हवा के सीधे प्रभाव से बचाया जा सके। अत्यधिक ठंड के दिनों में तेज हवा से पशुओं के स्वास्थ्य बिगड़ने से उत्पादन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है अतः बाड़ों की खिड़कियों एवं दरवाजों पर बोरी या परदे लगा देने चाहिए। पशु आवास जिनकी छतें लोहे या सीमेन्ट की चद्दरों की बनी हुई है वे प्रायः अधिक ठंडी रहती हैं अतः इन छतों पर घास या टाट की बोरियां डाल देनी चाहिए। बाड़ों में उपस्थित नमी को नियंत्रित करने के लिए पर्दों/बोरियों को दिन में धूप निकलने के पश्चात ऊपर उठा देना चाहिए। पशु आवासों की फर्श ढलान युक्त होनी चाहिए ताकि मूत्र आदि की निकासी अच्छे से हो एवं फर्श सूखा बना रहे। पशुओं के बाड़ों में ठंड से बचने के लिये सूखा घास (पराली)/भूसा या क्षेत्रानुसार कोई भी सूखी घास बीछा देनी चाहिए। पशुओं को दिन के धूप निकलने के पश्चात शेडों (बाड़ों) से बाहर बांध देना चाहिए ताकि उन्हें ठंड का प्रभाव कम होने के साथ-साथ विटामिन-डी एवं शरीर पर उपस्थित कीटाणु भी सूर्य की पैरा बैंगनी किरणों से नष्ट हो सके। पशुओं को अत्यधिक ठंड वाले दिनों में सवेरे एवं शाम के समय बाहर खुले में नहीं बांधना चाहिए।

### सर्दियों में दुधारु पशुओं का विशेष/पोषण प्रबंधन :

सर्दियों में पशुओं का तापमान बनाये रखने के लिए अधिक आहार की आवश्यकता होती है अतः उन्हें उनकी इच्छानुसार भरपूर संतुलित आहार देना चाहिए। सर्दियों में प्रचूर मात्रा में आहार देने से त्वचा के नीचे उपस्थित वसा की परत की मोटाई में वृद्धि से सर्दी का बचाव होता है। अतः सर्दियों में पशुओं को उर्जा, प्रोटीन, खनिज लवण, पानी, विटामिन, वसा आदि युक्त संतुलित आहार उत्पादन एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से आवश्यक मात्रा में देना चाहिए। उदाहरण के तौर पर:

#### यदि दूध उत्पादन

गाय एवं भैंस

7 किलो 5 किलो प्रतिदिन

#### प्रतिदिन

25-30 किला फलीदार हरा चारा (बरकीय/तुसल)

7-8 किलो सूखा चारा (कडबी, पराली, भूसा)

2-3 किलों (दाने में अधिक ऊर्जा वाली चीजे जैसे मक्का, बाजरा इत्यादि)

30-40 किला खनिज मिश्रण

#### अधिक दूध देने वाली-

गाय में 5 किलों से ऊपर हर 2.5 किलो दूध पर एवं भैंस में 2 किलो दूध के लिए 1 किलों दाना अतिरिक्त देना चाहिए। पशुओं को ताजा व स्वच्छ पानी पिलाना चाहिए। ठंड के समय यदि संभव हो तो गुनगुना पानी उपलब्ध करवायें।

### पशुओं में सर्दी लगने के लक्षण एवं उनका उपचार

#### लक्षण:

शरीर का तापमान कम होना, नाक में पानी आना, सांस एवं हृदय की धड़कन का तेज होना, भूख न लगना, दुग्ध उत्पादन में कमी, शरीर को हमेशा सिकुड़कर रखना, अपच या आफरा होना, पानी कम पीना, अधिक बीमार होने की स्थिति में नाक से गाढ़े क्यूक्स का आना एवं श्वास के साथ गरगराहट की आवाज आना।

#### प्राथमिक उपचार -

- बीमार पशु को पास अलाव जलाकर उसे गर्म रखने की कोशिश करें।
- नाक बंद होने या श्वास के साथ गरगराहट की स्थिति में अजवायन का धुआं करने से पशु को आराम मिलता है।
- पशु को अपच अथवा आफरे की स्थिति में 50 ग्राम तारपीन का तेल + 5-10 ग्राम हींग + 500 ग्राम सरसों/अलसी का तेल पीलाना चाहिये।
- लम्बे समय तक सर्दी के लक्षण रहे तो नजदीकी पशुचिकित्सक से सम्पर्क कर उपचार लेना चाहिए।

### सर्दियों में गर्भस्थ पशु की देखभाल :

पशु को गर्भाधान के लगभग 2-3 महिने पश्चात गर्म परीक्षण करके उसकी पुष्टी के अनुरूप ही उसका प्रबंधन करना चाहिए। गर्भस्थ पशु का खान-पान बाकी पशुओं से अलग होना चाहिए। प्रथम तिमाही में उन्हें रेशेदार भोजन एवं खनिज लवण प्रचुर मात्रा में देना चाहिए जिसे तीसरी तिमाही तक सान्द्र मिश्रण को बढ़ाते हुये लक्षण को कम कर देना चाहिए। सर्दियों में इनके आवासों में साफ-सफाई आवश्यक रूप से रखनी चाहिए ताकि गर्भावस्था दौरान मादा पशु एवं इसके बच्चे को किसी प्रकार की बीमारी का सामना न करना पड़े। गर्भस्थ पशु को सर्दी से बचाने के लिये उसे रात को बोरी या कोई गर्म कपड़ा पहना देना चाहिए। सर्दियों में प्रसव पश्चात उत्पन्न दुग्ध प्राप्ति हेतु कम से कम 60 दिन का शुष्क काल प्रदान करना चाहिये। सर्दियों में नमी के कारण थनैला रोग होने की संभावना अधिक रखती है अतः शुष्क काल के प्रथम दिन ही थनों में प्रतिजैविक दवा डाल देनी चाहिये।

### सर्दियों में नवजात की देखभाल:

नवजात पशुओं की सबसे ज्यादा मौते सर्दी लगने या इनसे होने वाली दस्तों से होती है अतः इनका विशेष प्रबंधन आवश्यक है। प्रसव के तुरन्त पश्चात नवजात पशु के बीछावन के तौर सूखा घास (पशली) आदि बिछा देनी चाहिये। रात के समय उसके शरीर को बोरी आदि से ढक देना चाहिये। प्रसव के तुरन्त पश्चात गर्भकाल के संक्रमण से बचने के लिये साफ बीछावन इसके पेट के चारों तरफ कपड़ा बांध देना चाहिए। सर्दी के लक्षण प्रतीत होने पर इसके प्राथमिक उपचार अथवा पशुचिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिये।

दुधारु पशुओं से समुचित दुग्ध उत्पादन एवं अच्छे स्वास्थ्य के लिये आवास एवं खान-पान का विशेष ध्यान दें। पशुपालक एवं किसान भाई उचित समय पर गर्म परीक्षण के पश्चात गर्भस्थ पशु का पृथक रूप से प्रबंधन करते हुये उच्चतम दुग्ध उत्पादन हेतु 60 दिवस का शुष्क काल आवश्यक रूप से प्रदान करें। सामान्य प्रबंधन में सम्मिलित अभ्यासों जैसे कृमिनाशक दवा पिलाना, टीकाकरण आदि को उनकी आवृत्ति एवं मौसमानुसार आवश्यक रूप से अमल में लाना चाहिये।

**डॉ. कुसुमलता झाझड़िया एवं डॉ. मैना कुमारी**  
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर





## मुर्गियों में एवियन इन्फ्लूएंजा ( बर्ड फ्लू ): कारण और निवारण

एवियन इन्फ्लूएंजा या एवियन फ्लू को बर्ड फ्लू के नाम से भी जाना जाता है। एवियन इन्फ्लूएंजा वायरस एच 5 एन की वजह से होता है। बर्ड फ्लू का संक्रमण मुर्गी, टर्की, बत्ख, मोर आदि पक्षियों में तेजी से फैलता है। यह वायरस इतना खतरनाक होता है कि इससे मनुष्य एवं पक्षियों की मौत भी हो सकती है। मनुष्य में यह गंभीर श्वसन लक्षण पैदा करता है। बर्ड फ्लू संक्रमित पक्षी के मल, नाक के स्राव, मुंह की लार तथा आंखों से निकलने वाले पानी के सम्पर्क में आने से होता है। मनुष्यों में यह संक्रमण संक्रमित पक्षी के सम्पर्क में आने से, संक्रमित पक्षियों के मांस (कच्चा मांस), कच्चे अंडे या हाफ फ्राइड अंडे आदि के सेवन करने से होता है। मनुष्य यदि संक्रमित पशु-पक्षी के शरीर के तरल पदार्थ जैसे लार, सांस की बूंदें या बीट (मल-मूत्र) के सम्पर्क में आते हैं तो बर्ड फ्लू से संक्रमित हो सकते हैं। मनुष्यों में एच 5 एन 1 वायरस बर्ड फ्लू का कारण बनता है। बर्ड फ्लू एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के बीच कम संक्रामक है परन्तु बर्ड फ्लू संक्रमित पशुओं के सम्पर्क में आने से मनुष्य रोगी हो सकता है, जो व्यक्ति मुर्गी, बत्ख, गीज आदि पक्षियों के साथ काम करते हैं उन्हें बर्ड फ्लू का सबसे ज्यादा खतरा हो सकता है।

### संक्रमित पक्षियों में बर्ड फ्लू के लक्षण:

- ❖ पक्षी की आंख, गर्दन और सिर के आस-पास सूजन आना।
- ❖ कलंगी और टांगों पर नीलापन आ जाना।
- ❖ पक्षी के शरीर में थकान और सुस्ती आना।
- ❖ सांस लेने में परेशानी तथा नाक व आंख में पानी आना।
- ❖ पक्षी के आहार लेने में कमी आना।
- ❖ अचानक पंखों का गिरना शुरू हो जाना।
- ❖ अंडा उत्पादन में गिरावट।
- ❖ पक्षियों की अचानक मृत्यु हो जाना।

### बर्ड फ्लू से मुर्गियों सहित अन्य पक्षियों को बचाने के उपाय:

- ❖ पशु-पक्षियों के साथ काम करते समय सुरक्षात्मक कपड़े जैसे मास्क, चश्मा, दस्ताने व जूते आदि का प्रयोग करें।
- ❖ पशु-पक्षियों को छूते समय या काम करने के बाद अपने हाथों को बार-बार धोएं।
- ❖ दो प्रजाति के पक्षियों को एक ही स्थान पर ना रखें क्योंकि यदि इनमें से एक पक्षी भी बर्ड फ्लू से संक्रमित हुआ तो वो उसी स्थान पर अन्य प्रजाति के पक्षियों को भी संक्रमित कर देगा।
- ❖ पोल्ट्री फार्म में बाहरी पक्षियों एवं व्यक्तियों का प्रवेश वर्जित होना चाहिए क्योंकि यदि बाहरी पक्षी या व्यक्ति बर्ड फ्लू संक्रमित है तो ये पक्षियों के साथ-साथ मनुष्यों के लिए भी खतरनाक साबित हो सकता है, इसलिए पोल्ट्री फार्म पर जैव सुरक्षा रखनी चाहिए।
- ❖ पोल्ट्री फार्म में नया उपकरण या कोई नया पक्षी लायें तो उसे आवश्यक दवाओं के छिड़काव से संक्रमण मुक्त करें।
- ❖ यदि फार्म में नये चूजे लेकर आ रहे हैं तो उन्हें 30 दिनों तक संगरोध गृह में रखें उसके बाद ही स्वस्थ चूजों के साथ रखें।
- ❖ पक्षियों के बाड़े को स्वच्छ रखें इसके लिए पोल्ट्री फार्म की नियमित सफाई करें तथा समय-समय पर चूने के घोल का छिड़काव करें।
- ❖ यदि बाड़े के किसी पक्षी में बर्ड फ्लू के लक्षण दिखाई दे तो उस पक्षी को अन्य स्वस्थ पक्षियों से तुरन्त अलग कर दें तथा इसकी सूचना निकटतम पशु चिकित्सालय को दें ताकि बर्ड फ्लू के खतरे से निपटने के लिए आवश्यक कदम उठाये जा सकें।

### बचाव:

- ❖ संक्रमण वाले एरिया में जाने से बचे, अगर जाना जरूरी हो तो पी.पी.ई. किट पहन कर ही पोल्ट्री फार्म या संक्रमित एरिया में जायें।
- ❖ बर्ड फ्लू का संक्रमण यदि फैला है तो अंडे, मांस इत्यादि का सेवन न करें। यदि कर रहे हैं तो अंडे, मांस आदि को अच्छे से धोकर, पकाकर या उबालकर ही काम में लें।
- ❖ संक्रमित पक्षी खासकर मरे हुए पक्षियों से दूर रहें तथा मृत पक्षी का निस्तारण गहरे गड्ढे में करें।

डॉ. दीपिका धूडिया

सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

## सफलता की कहानी

उन्नत नस्ल अपनाकर आर्थिक रूप से

सुदृढ़ हुए सोहनलाल

उन्नत नस्ल अपनाकर आर्थिक रूप से सुदृढ़ हुए झुंझुनू जिले की तहसील उदयपुरवाटी के गांव धौलाखेड़ा के प्रगतिशील पशुपालक सोहनलाल ने कृषि के साथ-साथ पशुपालन व्यवसाय को सीमित स्तर पर पिछले 15 वर्षों से करते आ रहे हैं। सोहनलाल ने पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनू द्वारा समय-समय पर आयोजित विभिन्न पशुपालक प्रशिक्षणों में भाग लिया। इसी दौरान पशु विज्ञान केन्द्र द्वारा दी गई जानकारीयों को अपनाते हुए गत दो वर्ष पूर्व उन्नत नस्ल के पशुओं को पशुशाला में शामिल करने की इच्छा जागृत हुई। स्नातक स्तर तक शिक्षित होने के बावजूद भी उनकी रुचि सदैव पशुपालन को एक व्यवसाय के रूप में करने की थी। वर्तमान में इसको यथार्थ के धरातल पर स्थापित कर पशुपालन को एक सफल व्यवसाय के रूप में आगे बढ़ा रहे हैं। इनके पास मुर्गा नस्ल की 4 भैंसों, 3 गायों के साथ 35 उन्नत नस्ल की बकरियां भी हैं। इन पशुओं से प्रतिदिन दूध उत्पादन लगभग 50 लीटर तक हो जाता है तथा उत्पादित दूध को निकट संकलन केन्द्र पर देते हैं एवं उन्नत नस्ल के बकरे तैयार कर निकटतम बकरा मंडी, नवलगढ़ में बिक्री कर अच्छी रकम वसूलते हैं। इन्होंने इन कार्यों के लिए दो लोगों को रोजगार भी दे रखा है। एक सफल पशुपालक के साथ-साथ अपने आसपास के क्षेत्र के गांव में भी काफी पहचान बना ली है, जिसके कारण आसपास गांवों के किसानों को भी पशुपालन से संबंधित जानकारी के लिए पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनू से सम्पर्क करने की सलाह देते हैं। पशुओं के लिए चारे की पूर्ति स्वयं के खेत से हो जाती है तथा इनके पास चारा काटने की मशीन भी है। सोहनलाल अपने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान तकनीक को अधिक महत्व देते हैं। पशुओं का प्राथमिक उपचार पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनू के वैज्ञानिकों एवं पशु चिकित्सकों की सलाह से स्वयं कर लेते हैं तथा आवश्यक होने पर पशुचिकित्सक की सेवाएं लेते हैं। कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण मिश्रण की उपयोगिता, टीकाकरण, दुधारू पशुओं की देखभाल, पशुओं में नस्ल सुधार द्वारा दूध उत्पादन में वृद्धि, संतुलित पशु आहार आदि की जानकारी सांझा करते हैं। इनकी पशुपालन से वार्षिक आय लगभग 6 लाख रु. तक हो जाती है। निकट भविष्य में सिरोंही नस्ल का बकरी फार्म करने की सोच रखते हुए पशुपालन व्यवसाय को ओर भी वृहद स्तर पर करना चाहते हैं। सोहनलाल अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार के सदस्यों के साथ-साथ पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनू को देते हैं।



सम्पर्क-सोहनलाल

ग्राम धौलाखेड़ा ( झुंझुनू ), मो.नं. 9462263108



## बायोगैस ऊर्जा का एक वैकल्पिक स्रोत



बायोगैस, ऊर्जा के एक वैकल्पिक स्रोत के रूप में लोकप्रिय है। सूर्य के प्रकाश, पानी और हवा के अलावा बायोगैस ऊर्जा का एक पुनर्योजी स्रोत है। बायोगैस कई गैसों का मिश्रण है जो ऑक्सीजन की अनुपस्थिति में जैविक सामग्री के विघटन से उत्पन्न होती है, इसे पशुओं और स्थानीय रूप से उपलब्ध अपशिष्ट पदार्थों से उत्पादित किया जाता है। भारत में लगभग 300 लाख पशुधन (गाय व भैंस) है। इनसे लगभग 1500 टन अपशिष्ट पदार्थ का उत्पादन होता है। आमतौर पर



पशुधन अपशिष्ट का उपयोग ग्रामीण लोगों द्वारा खाना पकाने के ईंधन के रूप में किया जाता है पशुधन अपशिष्ट को ग्रामीणों द्वारा पूर्ण रूप से उपयोग में नहीं लिया जा रहा है एवं अपशिष्ट का बहुत बड़ा हिस्सा व्यर्थ हो जाता है, इसे पूर्ण रूप से काम में लेने के लिए बायोगैस बनानी चाहिए। बायोगैस एक ऐसा संयंत्र है जो पशुधन अपशिष्ट का कुशलता पूर्वक प्रबंधन करता है। इसके उपयोग से ग्रामीण भारत में ऊर्जा, खाद व जैविक खेती तथा रोजगार सृजन करके आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं। बायोगैस जिसे गोबर गैस भी कहा जाता है यह कई गैसों जैसे कार्बन डाई आक्साइड, हाइड्रोजन सल्फाइड तथा मीथेन का मिश्रण है। यह मुख्य रूप से अवायवीय वातावरण में मिथेनोजन जीवाणुओं द्वारा उत्पन्न की जाती है। बायोगैस निर्माण की प्रक्रिया दो चरणों में पूर्ण होती है। प्रथम चरण में गोबर में मौजूद अम्ल निर्माण करने वाले बैक्टीरिया के समूहों द्वारा गोबर व कचरे में मौजूद बायो डिग्रेडेबल कॉम्प्लेक्स ऑर्गेनिक पदार्थों को सक्रिय किया जाता है। दूसरे चरण में मिथेनोजेनिक बैक्टीरिया द्वारा मिथेन गैस बनाने के लिए कार्बनिक पदार्थों को विघटन किया जाता है। यद्यपि पशुओं के गोबर को बायोगैस संयंत्र के लिए मुख्य कच्चा पदार्थ माना जाता है लेकिन इसके अलावा मल, मुर्गियों की बीट व कृषिजन्य अन्य कचरे को भी काम में लिया जा सकता है। इससे गैस बनने के पश्चात गोबर की कदम (सलरी) भी प्राप्त होती है जो कृषि में खाद के रूप में काम में ली जाती है तथा उत्पादन बढ़ाने में मदद करती है। बायोगैस द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा के संकट को दूर किया जा सकता है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में ईंधन के रूप में मुख्य रूप से लकड़ियां काम में ली जाती है, जिसके लिए वनों की कटाई की जाती है। इस ऊर्जा को काम में लेने पर वनों की कटाई को भी कम किया जा सकता है तथा पारिस्थितिकी संतुलन को बनाये रखने में मदद मिल सकती है। विश्वविद्यालय भी अपने विभिन्न केन्द्रों के माध्यम से बायोगैस पर पशुपालकों को प्रशिक्षण देता है तथा बायोगैस के संयंत्र लगाने के लिए जागरूक करता है। इस तकनीक को अपनाकर किसान व पशुपालक भाई वनों की कटाई को रोकने तथा पारिस्थितिकीय संतुलन को बनाये रखने में अपना योगदान दे सकते हैं।

**प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर**

## “धीणे री बातयां”

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम  
माह के तीसरे गुरुवार को  
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक  
प्रदेश के 17 आकाशवाणी  
केन्द्रों से प्रसारण



पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी  
प्राप्त करने के लिए

**टोल फ्री हैल्पलाइन**  
**1800 180 6224**

### मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच

### संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सैन

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

**प्रसार शिक्षा निदेशालय**

☎ 0151-2200505

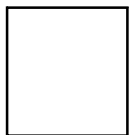
email : deerajuvass@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/  
विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवाार्थ

सेवा में



स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. ( डॉ. ) हेमन्त दाधीच द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. ( डॉ. ) हेमन्त दाधीच